पावन जीवन चरित्र

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी का जीवन चरित्र

SGD

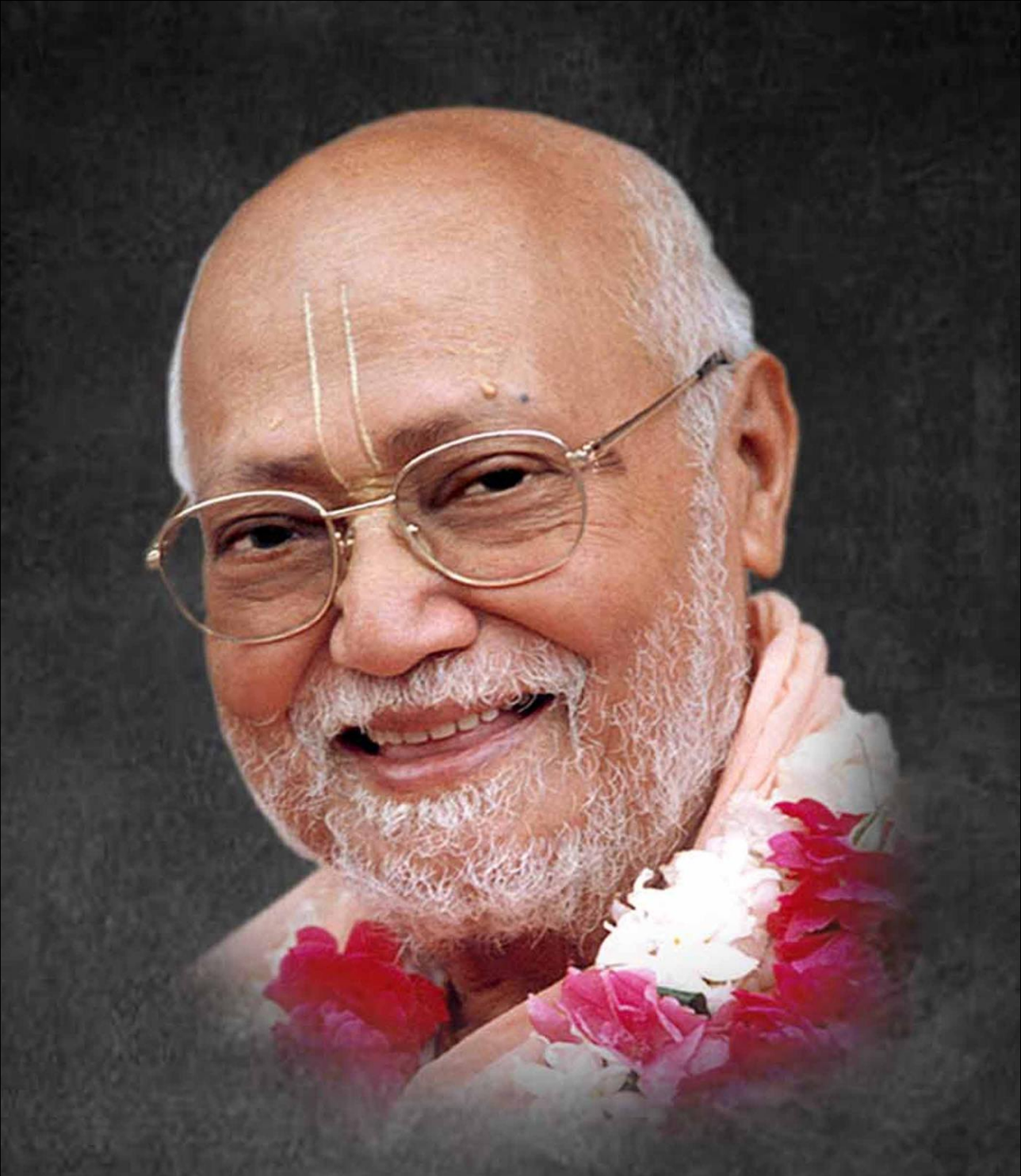

निखिल भारत श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ
प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता,
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108
श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज विष्णुपाद जी के
प्रियतम शिष्य, त्रिदण्डिस्वामी
श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज
जी द्वारा सम्पादित

SGD

तृतीय खण्ड

भाग – 7

श्रील गुरुदेव जी ने दोपहर की तीसरी सभा के अधिवेशन में सभापति के अभिभाषण में कहा

“सनातन-धर्म all-accommodating एवं all embracing है। कारण, यह धर्म किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी जाति-विशेष अथवा सम्प्रदाय-विशेष का धर्म नहीं है । भौगोलिक सीमा द्वारा विभक्त किसी भी देश का धर्म सनातन धर्म नहीं है । हिन्दु धर्म को ‘सनातन-धर्म’ नहीं कहा जाता है। सनातन-वस्तु का जो धर्म है, वह ही सनातन धर्म है। देह और मन असनातन हैं, इसलिये उनका धर्म भी असनातन है अर्थात्

अनित्य है; देह और मन से अतीत आत्मा सनातन होने के कारण उसका धर्म ही सनातन धर्म है। सभी जीवों का स्वरूप-धर्म ही सनातनधर्म है । त्रिगुणात्मक प्रकृति के संग से जीवों में जो बहुत से नैमित्तिक धर्मों का प्रकाश देखा जाता है, वह वर्णभेद से, आश्रमभेद से, जातिभेद से, देशभेद से अलग-अलग है। बद्ध जीव के लिये स्वरूप के धर्म में प्रतिष्ठित होना कोई सहज बात नहीं है। इसीलिए क्रममार्ग से स्वरूपधर्म तक पहुँचने के लिए वर्णाश्रम धर्म की व्यवस्था दी गयी है। प्रचलित समाज की व्यवस्था में

वर्णाश्रमधर्म को सनातन धर्म कहने का उद्देश्य यह है कि उसका चरम लक्ष्य है- सनातनधर्मा। बद्धजीव के कल्याण के लिये समाज की ऐसी सुवैज्ञानिक व्यवस्था कहीं भी नहीं देखी जाती। सनातन धर्म के मुख्य तात्पर्य 'श्रीभागवत धर्म' को श्रीचैतन्य महाप्रभु जी ने स्वयं आचरण करके प्रचार किया है तथा उन्होंने कहा है कि इस भागवत-धर्म के आश्रय में सभी विश्ववासी एक ही प्रीति-सूत्र में बंध सकते हैं।

श्रीचैतन्य महाप्रभु जी के प्रेमधर्म की वाणी उनके योग्य

अनुगत आचार्यों द्वारा - विशेषतः विश्वव्यापी श्रीचैतन्य मठ, श्रीगौड़ीय मठ और श्रीगौड़ीय मिशन प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता हमारे गुरुदेव, नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ श्रीमद् भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद जी के श्रीपुरुषोत्तम क्षेत्र में आविर्भाव के बाद उनके तथा उनके शिष्य- प्रशिष्यों के व्यापक प्रचार के फल से विश्व में सर्वत्र ही समादृत हुई है। 'ह्युत्कले पुरुषोत्तमात्'- अर्थात् पद्म पुराण का वचन है कि कलियुग में श्रीपुरुषोत्तम धाम से ही पूरी पृथ्वी पर कृष्णभक्ति प्रचारित होगी। पद्म पुराण के इस वाक्य की

सत्यता अब स्पष्ट प्रतिपादित हो रही है।

अलग-अलग दिनों में अलग-अलग समय पर सभा में अपनेअपने विचार दिये - उड़ीसा के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री और उत्तरप्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल, श्री विश्वनाथ दास, उड़ीसा के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री, श्री हरेकृष्ण महताव, कटक हाईकोर्ट के न्यायाधीश, श्री कुंजबिहारी पाण्डा, दैनिक समाज पत्रिका के सम्पादक, श्री राधानाथ रथ, पण्डित रघुनाथ मिश्र, पटना हाईकोर्ट के भूतपूर्व न्यायाधीश, श्री

हरिहर महापात्र, डाक्टर टी० एम० पी० महादेवन, श्री गौरीकुमार ब्रह्म, श्री अरविन्दम् वसु, श्री सदाशिव रथशर्मा, श्री कुंजबिहारी दास, श्री गौरीनाथ शास्त्री, डा० एस० वी० भार्णेकर (महाराष्ट्र), श्री कृष्ण प्रसाद मिश्र, श्री अनन्त त्रिपाठी मिश्र, श्री चिन्ता मणि मिश्र, श्री सत्यवादी मिश्र, श्री राज किशोर राय, श्री टी० राम कृष्ण, प्रोफेसर जयकृष्ण मिश्र, प्रोफेसर रंगधर सरंगी, डा० एम० डी० बाल सुब्रामनीयम् और श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ के सम्पादक, श्रीमद् भक्ति बल्लभ तीर्थ महाराज जी ने। इस

धर्म सभा में हज़ारों नर-नारी सम्मिलित हुए थे।

श्रीलगुरुदेव